नवभारत
संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

अंधाधुंध विकास की कीमत चुकाते पहाड़

उत्तराखंड के उत्तरकाशी जिले में हाल ही में बादल फटने से हुई तबाही ने एक बार फिर विकास और विनाश के बीच की नाजुक रेखा को उजागर कर दिया है. धराली गांव में बादल फटने से अचानक आई बाढ़ और मलबे ने कई घरों, होटलों और दुकानों को बहा दिया, जिसमें चार लोगों की मौत हो गई और कई लापता हो गए. यह घटना, 2013 की केदारनाथ त्रासदी और 2021 के चमोली हादसे जैसी पिछली आपदाओं की याद दिलाती है. ये घटनाएं भूगर्भीय अस्थिरता, नदियों के बहाव में रुकावट, और बदलते मौसम के कारण होती हैं, लेकिन यह भी सच है कि इन आपदाओं का मुख्य कारण मानव-जनित गतिविधियों का बढ़ता हस्तक्षेप है.दरअसल,

उत्तराखंड एक भूगर्भीय रूप से सक्रिय और संवेदनशील क्षेत्र है. हिमालय एक नवोदित पर्वत श्रृंखला है, जो अभी भी बन रही है, और यहां की मिट्टी और चट्टानें अत्यंत नाजुक हैं. इसके बावजूद, चारधाम सड़क परियोजना, सुरंगें, जलविद्युत परियोजनाएं, और बड़े-बड़े होटल व इमारतें बिना किसी पर्यावरणीय संतुलन के बनाई जा रही हैं. विशेषज्ञों ने लगातार चेतावनी दी है कि पर्वतीय क्षेत्रों में भारी मशीनों का प्रयोग, डायनामाइट से पहाड़ियों को उड़ाना, और नदियों के प्राकृतिक बहाव को मोड़ना दीर्घकालिक रूप से विनाशकारी हो सकता है. 2013 की केदारनाथ त्रासदी से लेकर 2023 के जोशीमठ भू धंसाव और हालिया उत्तरकाशी सुरंग हादसे तक, हर आपदा में मानवीय हस्तक्षेप एक प्रमुख कारण के रूप में सामने आया है.

उत्तराखंड में 450 से अधिक जलविद्युत परियोजनाएं प्रस्तावित या निर्माणाधीन हैं, जिनमें से कई संवेदनशील भूकंपीय क्षेत्रों में स्थित हैं. भूवैज्ञानिकों और पर्यावरणविदों ने चेतावनी दी है कि इतनी बड़ी संख्या में सुरंगें और डायवर्सन नदियों के प्राकृतिक बहाव को अस्थिर कर सकते हैं, जिससे भविष्य में और भी बड़ी आपदाओं का खतरा बढ़ सकता है.

यह समझना महत्वपूर्ण है कि उत्तराखंड जैसे हिमालयी राज्यों को विकास की आवश्यकता है, खासकर जब यह क्षेत्र सामरिक दृष्टि से भी अहम हो. लेकिन यह विकास सतत और संवेदनशील होना चाहिए. हमें प्रकृति के साथ तालमेल बिठाकर विकास करना होगा.

केंद्र और राज्य सरकारों को मिलकर एक ऐसा ढांचा तैयार करना चाहिए, जिसमें नीति आयोग, पर्यावरण मंत्रालय, और रक्षा विभाग एक साथ काम करें. इस ढांचे में पर्यावरण विशेषज्ञों को शामिल किया जाए और स्थानीय भूगोल, पारंपरिक ज्ञान और समुदायों की भागीदारी को प्राथमिकता दी जाए. पहाड़ सिर्फ पर्यटन स्थल नहीं हैं, बल्कि लाखों लोगों की आस्था, आजीविका, और विरासत का हिस्सा हैं. यदि हम समय रहते निर्माण की दिशा और प्रकृति को नियंत्रित नहीं करते हैं, तो हम न केवल प्राकृतिक आपदाओं की मार झेलेंगे, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को भी एक अस्थिर और असुरक्षित हिमालय सौंपेंगे. कुल मिलाकर उत्तराखंड की यह दुर्घटना एक गंभीर चेतावनी है. हमें अब रुककर सोचने की आवश्यकता है कि क्या विकास वास्तव में विनाश की कीमत पर ही संभव है ?. इसका समाधान प्रकृति के साथ चलने में है, न कि उसके विरुद्ध.

दरअसल, पहाड़ हमारी समृद्ध विरासत का हिस्सा हैं. इनकी सुरक्षा हर कीमत पर जरूरी है .उत्तराखंड और हिमालयी राज्य एक ओर विकास की आकांक्षाओं से भरे हैं, वहीं दूसरी ओर पारिस्थितिकी की सीमा भी स्पष्ट है. विकास की जरूरत से इनकार नहीं किया जा सकता, विशेषकर जब यह क्षेत्र सामरिक दृष्टि से भी अहम हो; लेकिन यह भी उतना ही आवश्यक है कि विकास पर्यावरण के प्रति संवेदनशील हो.

भारतीय हथकरघा

भविष्य को बना रहे सशक्त

पबित्रा मार्गेरिटा
वस्त्र राज्यमंत्री

हर साल 7 अगस्त को राष्ट्रीय हथकरघा दिवस एक ऐसे क्षण का प्रतीक है जो भारत के अतीत को उसके भविष्य से धागे-दर-धागा, कहानी-दर-कहानी जोड़ता है. यह दिन 1905 के स्वदेशी आंदोलन का स्मरण कराता है, जब हाथ से बुना कपड़ा न केवल एक वस्त्र के रूप में, बल्कि प्रतिरोध, आत्मनिर्भरता और सांस्कृतिक पहचान के एक सशक्त प्रतीक के रूप में उभरा. एक नई शुरुआत के रूप में प्रारंभ हुआ यह प्रतीक विरासत, कला और सामुदायिक अभिव्यक्ति के ताने-बाने में बदल गया. हथकरघा क्षेत्र आज ग्रामीण और अर्ध-शहरी भारत में 35 लाख से अधिक बुनकरों और संबद्ध श्रमिकों को रोजगार देता है, जिनमें से 72 प्रतिशत महिलाएँ हैं. अपनी समृद्धि के कारण, यह क्षेत्र अब एक ऐसे दौर में खड़ा है, जहाँ इसे बिना किसी कमी के नवाचार, बिना किसी अभाव के तकनीक और बिना किसी हाशिए के आधुनिकीकरण की आवश्यकता है.

एक स्थायी विरासत- भारत में हथकरघा बुनाई की समृद्ध विरासत हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की प्राचीन सभ्यताओं से जुड़ी है. सहस्राब्दियों से, यह शिल्प फलता-फूलता रहा है और प्रत्येक क्षेत्र ने बुनाई, विशिष्ट तकनीकों, रूपांकनों और अर्थों का अपना तौर-तरीका विकसित किया है. असम के मुगा रेशम की सुनहरी चमक से लेकर प्रसिद्ध बनारसी रेशमी साड़ियों तक; कश्मीर की पश्मीना से लेकर तमिलनाडु की चमकदार कांजीवरम साड़ियों तक, भारत की हथकरघा परंपराएँ उतनी ही विविध हैं, जितने इसके लोग. एक बुनकर के घर में, जहाँ करघा अक्सर रसोई या एक तरफ के आँगन के साथ जगह साझा करता है, प्रत्येक साड़ी या शॉल एक अनोखी कथा को संप्रेषित करने के लिए तैयार की जाती है. न्यूनतम तकनीक, लेकिन अधिकतम रचनात्मकता के साथ, बुनकर धागों को विरासत में बदल देते हैं. बिना सिले हुए कपड़े, जो भारतीय परिधानों के प्रतीक हैं, क्षेत्रीय अभिव्यक्ति, अनुष्ठानों और कहानी कहने के कैनवास बन गए हैं. हमारे माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के शब्दों में, हथकरघा भारत की विविधता और अनगिनत बुनकरों व कारीगरों की कुशलता को दर्शाता है.

पूर्वोत्तर: अवसरों का एक करघा- देश के कुल हथकरघा श्रमिकों में से लगभग 52प्रतिशत पूर्वोत्तर क्षेत्र में निवास करते हैं और 2019-20 की हथकरघा जनगणना के अनुसार, असम 12.83 लाख से अधिक बुनकरों और 12.46 लाख करघों के साथ देश में अग्रणी है. असम का मैनचेस्टर कहा जाने वाला सुआलकुची, पारंपरिक बुनाई उत्कृष्टता का प्रमाण है, जबकि धेमाजी जिले में मचखोवा जैसे विकासशील केंद्र इस क्षेत्र को और बढ़ावा देते हैं. इसके सांस्कृतिक महत्व को समझते हुए, पूर्वोत्तर के लिए सरकार का समर्पित मिशन आदिवासी बुनाई को बढ़ावा देने, हथकरघा पर्यटन को प्रोत्साहित करने, निर्यात को सुविधाजनक बनाने और युवाओं को प्रशिक्षित करने पर केंद्रित है.

इस क्षेत्र को एक वैश्विक डिज़ाइन केंद्र के रूप में स्थापित किया जा रहा है, जहाँ प्राकृतिक रेशे, प्राचीन ज्ञान और आधुनिक उद्यमिता का संगम होता है. राष्ट्रीय हथकरघा विकास कार्यक्रम टे समूहों को वित्तीय सहायता प्रदान की गई है. शिवसागर में एक बड़ा हथकरघा समूह स्थापित किया गया है तथा इम्फाल पूर्व और सुआलकुची में ऐसी दो परियोजनाएँ चल रही हैं. इस क्षेत्र में लगभग 3.08 लाख बुनकरों ने प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना और प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना के अंतर्गत सार्वभौमिक एवं किफायती सामाजिक सुरक्षा के लिए नामांकन कराया है, जिनमें असम के 1.09 लाख बुनकर शामिल हैं.

पुनरुद्धार से पुनरुत्थान तक

पिछले 11 वर्षों में, वस्त्र मंत्रालय के कई विशिष्ट कार्यक्रमों के जरिये भारत के हथकरघा उद्योग में उल्लेखनीय सुधार हुआ है. समूह विकास पहलों, आधुनिक उपकरणों और ऋण तक पहुँच ने बुनाई को घरेलू गतिविधियों से सूक्ष्म उद्यमों में बदलने में मदद की है. राष्ट्रीय हथकरघा विकास कार्यक्रम (एनएचडीपी) और कच्चा माल आपूर्ति योजना (आरएमएसएस) ने सूत की आपूर्ति, करघा उन्नयन, कार्य शेड निर्माण से लेकर आधुनिक उपकरणों तक पहुँच प्रदान करके शुरू-से-अंत तक सहायता सुनिश्चित की है. पीएमजेजेबीवाई और पीएमएसबीवाई जैसी योजनाओं से अत्यंत आवश्यक वित्तीय और सामाजिक सुरक्षा मिली है. बुनकरों की मुद्रा योजना के तहत रियायती ऋण और अतिरिक्त राशि (मार्जिन मनी) सहायता ने कार्यशील पूंजी तक पहुँच का विस्तार किया है. बुनकरों और उद्यमियों के लिए लागत कम करने और उत्पादकता बढ़ाने के उद्देश्य से, उच्च क्षमता वाले क्षेत्रों में हथकरघा पार्क स्थापित करने की योजना है. इन एकीकृत स्थानों में रंगाई इकाइयाँ, तुरंत शुरू करने योग्य (प्लग-एंड-प्ले) कार्यशालाएँ, डिजिटल प्रयोगशालाएँ, शोरूम तथा सौर ऊर्जा एवं अपशिष्ट पुनर्चक्रण जैसी सतत संरचनाएँ शामिल होंगी. साथ ही, निफ्ट, एनआईडी और अन्य डिज़ाइन संस्थानों के साथ साझेदारी में क्षेत्रीय स्तर पर डिज़ाइन और नवाचार केंद्र स्थापित किए जा रहे हैं, जहाँ डिज़ाइनर और बुनकर बुनाई के पारंपरिक सार का सह-निर्माण, संरक्षण और दस्तावेज़ीकरण करेंगे.

दिल्ली डायरी

एसआईआर को लेकर चल रहे विरोध की कमजोर हुई धार

प्रवेश कुमार मिश्र

बिहार में चलाए जा रहे मतदाता विशेष पुनरीक्षण कार्यक्रम को आधार बनाकर जहां एक तरफ कांग्रेस समेत ज्यादातर विपक्षी दलों की ओर से संसद से सड़क तक हंगामा किया जा रहा था वहीं दूसरी ओर राजद नेता व पूर्व उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव के दो वोटर कार्ड का मामला सामने आने के बाद मामला उल्टा पड़ गया है. इसी वजह से विरोधी दलों का विरोधी स्वर अब शांत पड़ता जा रहा है और सत्ताधारी दलों की ओर से आक्रामक पलटवार आरंभ कर दिया गया है. दिल्ली के राजनीतिक गलियारों में अब एसआईआर को लेकर इन दिनों खुब चर्चा हो रही है राजद के लोग भी दूसरे दलों के सवालों पर बगले झांकते दिख रहे हैं जबकि कांग्रेस पार्टी इस विषय पर अचानक मौन हो गई है. चर्चा है कि तेजस्वी ने जल्दबाजी के चक्कर में एक बड़े मुद्दे को व्यक्तिवादी बनाकर इसकी धार को कुंद कर दिया है.

हिट एंड रन की राजनीतिक रणनीति पर बढ़े पीके

चुनावी रणनीतिकार से राजनीति में प्रवेश कर चुके प्रशांत किशोर इन दिनों आम आदमी पार्टी प्रमुख अरविंद केजरीवाल की तर्ज पर अपने विरोधियों पर व्यक्तिगत आरोप लगाकर उन्हें जनता के सामने नि:शब्द करने के फिराक में लगे हुए हैं. पिछले दिनों बिहार भाजपा अध्यक्ष दिलीप जायसवाल को घेरने के बाद अब उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी पीके के निशाने पर हैं. पीके के इस तरीके को लोग हीट एंड रन का नाम दे रहे हैं. क्योंकि इसी तरह कभी केजरीवाल दिल्ली की तात्कालिक मुख्यमंत्री शीला दीक्षित व भाजपा नेता अरूण जेटली पर व्यक्तिगत हमला कर लोगों के बीच भ्रम फैलाने सफल हुए थे और बाद में कई विषयों पर माफी भी मांगी थी . इसलिए इन दिनों संसद के गलियारों में पीके की तुलना केजरीवाल से करते हुए विभिन्न दलों के नेता अगले शिकार को लेकर कानाफूसी कर रहे हैं.

बिहार चुनाव में राहुल की रणनीति का होगा लिटमस टेस्ट

कांग्रेस पार्टी इन दिनों अपनी परंपरागत राजनीतिक शैली में बदलाव कर जातिगत समीकरण को साधकर आगे बढ़ने में लगी है. लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी जिस तरह से हरेक मंच से जातिगत जनगणना को आधार बनाकर एक वर्ग विशेष के वोट बैंक को साधने के प्रयास में जुटे हैं उसका असली लिटमस टेस्ट बिहार विधानसभा चुनाव में होने जा रहा है. दिल्ली में चर्चा है कि कांग्रेस पार्टी ने बिहार विधानसभा चुनाव में धर्म की काट में जाति को आगे करके मैदान में उतरने की तैयारी की है. संभवत: इसी वजह से उम्मीदवार चयन में भी जातिगत समीकरण को साधने के बहाने ओबीसी, एससी ,एसटी और अल्पसंख्यक को लेकर जिस तरह की रणनीति बनाई गई है. यदि बिहार में राहुल गांधी का यह प्रयोग सफल हुआ तो वृहद स्तर पर इसका विस्तार किया जाएगा.

ट्रंप की टैरिफ नीति में उलझी मोदी सरकार

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के बीच व्यक्तिगत दोस्ती के बावजूद जिस तरह से ट्रंप शासन ने भारत से व्यापार पर 25 फीसदी टैरिफ लगाने की घोषणा की है उसका विदेश व व्यापार नीति पर जो भी दूरगामी प्रभाव पड़े लेकिन देश की राजनीति पर इसका सीधा असर है . विपक्षी दलों के हाथ बैठे बिठाए मोदी सरकार पर निशाना साधने का नया हथियार मिल गया है . विपक्ष इसे मोदी सरकार की कमजोर विदेश नीति की संज्ञा देकर निशाना साध रहा है वहीं सरकार के रणनीतिकार इस नीति से ट्रंप शासन को होने वाले नुकसान का अर्थशास्त्रिय गणित के सहारे अपना बचाव कर रहे हैं . हालांकि कुछ लोग इसे खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे वाली लोकोक्ति से जोड़कर आत्ममुग्ध ट्रंप शासन को कटघरे में खड़ा करते हुए अमेरिका के सामने भारत के नहीं झुकने की नीति की प्रशंसा भी कर रहे हैं .

बंगले पर भुजबल का दावा, मुंडे का कब्जा

मंत्री बन जाने पर भी यदि रहने को बंगला न मिल पाए तो दिल में कसक होती है. महाराष्ट्र सरकार में कैबिनेट मंत्री छगन भुजबल की यही हालत है. च्सतपुड़ाज्ञ बंगला अब तक खाली ही नहीं हुआ तो भुजबल भुजबल क्या करें ! उन्होंने 20 मई को मंत्री पद की शपथ ली और एक पखवाड़े बाद सामान्य प्रशासन विभाग के अधिकारी ने उन्हें एक पत्र भेजकर संदेश दिया कि आपको सतपुड़ा बंगला एलाट किया गया है. आप वहां रहने जा सकते हैं. इस पत्र से बात नहीं बनी क्योंकि एनसीपी विधायक धनंजय मुंडे ने 5 माह पूर्व मंत्री पद से इस्तीफा देने के बावजूद यह बंगला अभी तक खाली नहीं किया. कब खाली करेंगे, कोई नहीं जानता !

कहावत है- कब्जा सच्चा और दावा झूठा ! दावा करते बैठो, जिसने कब्जा जमा रखा है वह एक इंच भी नहीं हिलेगा ! मंत्री बन जाने पर भी भुजबल मजबूर हैं. इस उम्र में वह भुजाओं का बल दिखाकर बंगला खाली नहीं करा सकते. मंत्री हैं, इसलिए कानून के रास्ते चलना पड़ेगा. न्यायपालिका में भी ऐसा होता है. पिछले सीजेआई चंद्रचूड़ ने बंगले पर कब्जा कायम रखा उनकी दलील थी कि उनकी गोद ली गई दोनों दिव्यांग बेटियों की सुविधा को देखते हुए जब तक दिल्ली में उपयुक्त निवास नहीं मिल जाता तब तक इसी सरकारी बंगले में रहेंगे. इस वजह से नए सीजेआई बीआर गवई को प्रतीक्षा करनी पड़ी. खबर है कि अब चंद्रचूड़ को वैकल्पिक आवास मिल गया है. इसलिए न्यायमूर्ति गवई को रहने के लिए सीजेआई का शानदार बंगला मिल जाएगा. जहां तक मुंबई के सतपुड़ा बंगले की बात है, मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने भी स्वीकार किया कि मुंडे वहां अब तक टिके हुए हैं. सामान्य प्रशासन के नियमों के अनुसार मंत्री पद से हटने के बावजूद सरकारी आवास में रहने की वजह से मुंडे को 40 लाख रुपए से ज्यादा रकम शुल्क के रूप में अदा करनी होगी. क्या यह रकम वसूल हो पाएगी या बंगला खाली कराया जाएगा ?

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

लोकसभा में उड़ाई विपक्ष की खिल्ली राज्यसभा जाना टालते मोदी

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, ऐसा क्यों हुआ कि प्रधानमंत्री मोदी ने लोकसभा में तो बयान दिया लेकिन राज्यसभा में जाकर बोलने से कतराए? राज्यसभा का महत्व इसलिए है कि वह हाउस ऑफ एल्डर्स या वरिष्ठों का सदन है. हमने कहा, प्रधानमंत्री की मर्जी है कि किस सदन में भाषण दें. राज्यसभा में विपक्ष का चक्रव्यूह है जहां मोदी से असुविधाजनक प्रश्न पूछे जाते, इसलिए उन्होंने वहां जाना टाल दिया. जब विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खड़गे ने पूछा कि पीएम लोकसभा में जा सकते हैं तो राज्यसभा में क्यों नहीं तो गृहमंत्री अमित शाह गुस्से से बोले कि पहले मुझसे तो निपट लो. मोदी आएंगे तो आपका और बुरा हाल होगा. तभी शाह का पक्ष लेने के लिए केंद्रीय मंत्री रवनीत बिट्टू खड़े हो गए जो कि कांग्रेस छोड़ बीजेपी में शामिल हुए थे. शाह ने डांटते हुए कहा- ओ बिट्टू बैठ जा ! इस तरह शाह अपने लोगों को भी फटकार देते हैं.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, हमें ऐसा लगता है कि

मोदी इसलिए राज्यसभा में नहीं गए क्योंकि वहां उनसे पूछा जाता कि ट्रंप बार-बार भारत-पाक संघर्ष रुकवाने का दावा कर रहे हैं. इस पर आप चुप क्यों हैं? क्यों नहीं कहते कि ट्रंप झूठे हैं? यदि मोदी ट्रंप को झूठा करार देते तो ट्रंप टैरिफ और बढ़ा सकते थे. इसी तरह ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तान को चीन के सहयोग के मुद्दे पर भी मोदी से सवाल किया जाता कि क्या चीन ने पाक को मिसाइल, फाइटर जेट और ड्रोन मुहैया कराए थे. मोदी खुलकर चीन का नाम भी लेना नहीं चाहते थे.

हमने कहा, विपक्ष के एक भी प्रश्न का जवाब देना टालते हुए मोदी ने लोकसभा में विपक्ष को संबोधित करते हुए कहा- अरे बयान बहादुरो ! विपक्ष का सवाल था कि ऑपरेशन सिंदूर पर संसद में चर्चा जारी रहते आतंकवादी कैसे मारे गए.

पिछले 100 दिनों से वह कहां छिपे बैठे थे ? इस पर मोदी ने कहा कि इसके लिए सावन सोमवार का मुहूर्त निकालूं क्या ? मुद्दों को टालकर मोदी विपक्ष की खिल्ली उड़ाते रहे और उनके समर्थक ताली बजाते रहे. यह सब लोकसभा में चल गया लेकिन मोदी जानते थे कि यह फार्मूला राज्यसभा में नहीं चल पाएगा इसलिए वह वहां नहीं गए.

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 11986 - डॉ. सागर खादीवाला

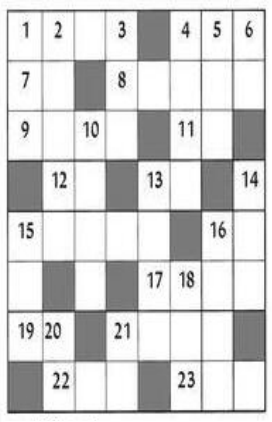

बाएं से दाएं
1. बोलने या पढ़ने में रुकना, रुकना 4. व्यर्थ बोलना, बकवास करना 7. (समस्त शब्दों में प्रयुक्त होने वाला) नाक का संक्षिप्त रूप 8. पलंग पर बिछाने की चादर 9. किसी आधार से नीचे की ओर टंगना, काम का अधूरा पड़ा रहना 11. रात्रि, निशा 12. कत्था 13. निषिद्ध, वर्जित (उर्दू) 15. घर का वह भाग जहां स्त्रियां रहती हैं (उर्दू) 16. घुमाव, चक्कर, उलझन, दो पतंगों की डोर का आपस में उलझना 17. जंगलीपन, पागलपन, उजड्डता (उर्दू) 19. मथनी, दही मथने की लकड़ी 21. जन साधारण की राय 22. कुछ पारिश्रमिक लेकर सौदा खरीदने या बेचने में सहायता देने वाला व्यक्ति, मध्यस्थ 23. कंपकंपी, थरथराहट, एक प्रकार का ज्वर (उर्दू)

ऊपर से नीचे
1. आग, अग्नि (सं.) 2. एकटक देखना, च्टकटकज्ञ शब्द करना 3. किसी मानदंड के अनुसार किसी वस्तु के विस्तार-परिमाण, मात्रा आदि का निर्धारण करना 4. फैलना, छितराना 5. कबूतर 6. बरबादी, अस्तित्व न रह जाना 10. छोटी कथा, कथावस्तु (सं.) 13. मनाने की क्रिया या भाव 14. बचाने का भाव, बचा हुआ अंश, लाभ 15. विष, गरल 16. पूर्व, पहले (उर्दू) 18. गर्भ (उर्दू) 20. खुशी का दिन, मुसलमानों का मजहबी त्योहार 21. पानी

Solution 11985

म	दि	रा	क्षी		द	क्ष	
धु		श		मे	ह	मा	न
र	ह	न	स	ह	न		क्ष
ता	व		ज	न		पा	त्र
	न	वा	ग	त		ता	
ह		म			क	ल	म
वे	त	न	भो	गी		गं	दा
ली	न		र		वे	गा	र

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में चिन्ताओं से छुटकारा मिलेगा, राज्य सम्मान की प्राप्ति होगी, गृहकार्य में व्यस्तता रहेगी, धन लाभ का योग है, मन में प्रसन्नता रहेगी, वर्ष के मध्य में यात्रा का योग है, व्यय में कमी तथा व्यापार में सुधार होगा, रोजगार में सफलता मिलेगी, भाईयों के सहयोग से राजनैतिक लाभ होगा, वर्ष के अन्त में व्यवहारकुशलता बढेगी, मित्र के कारण कार्यो में व्यवधान आयेगा. मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को भाईयों से राजनैतिक लाभ होगा, घरेलू कार्यों में व्यस्तता रहेगी, धन लाभ का योग है, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को व्यय में कमी तथा व्यापार में उहापोह की स्थिति निर्मित होगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को सहयोग मिलेगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को मन में विशेष प्रसन्नता रहेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक हंसमुख, मिलनसार, चंचल तथा व्यवहार कुशल और परिश्रमी होगा. जन्म स्थान से दूर रहकर अपना भाग्योदय करेगा. माता का भक्त होगा. यात्रा अधिक करेगा. तेजस्वी और निड़र होगा.

मेष- व्यापारिक विस्तार से अच्छी आय की सम्भावना बनेगी. आर्थिक लेनदेन में सावधानी रखें. मांगलिक कार्य बनने का योग है. शत्रु वर्ग प्रभावी रहेगा.

वृषभ- अधिकारियों के सहयोग से महत्वपूर्ण योजनायें पूरी हो सकती हैं. संतान के कारण भावनात्मक कष्ट होगा. धार्मिक कार्यों में खर्च होगा. यात्रा का योग है.

मिथुन- मित्र मण्डली के सहयोग से अटकी योजना शुरू कर सकते हैं. भौतिक सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी. महिला जाति की सलाह लाभप्रद रहेगी.

कर्क- महत्वपूर्ण निर्णय लेने में हिचकिचाहट हो सकती है. पुराने मित्र मिलेंगे. साहसिक प्रयत्न से अभीष्ट कार्यों की प्राप्ति होगी. दूर दराज की यात्रा का योग है.

सिंह- बुजुर्गों के स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी. कारोबार में उतार चढ़ाव से लाभ कम होगा. आकस्मिक खर्च होगा. परिणाम विलंब से मिलेंगे. शुभ संदेश मिलेगा.

कन्या- धार्मिक कार्यों में शामिल होकर अच्छा महसूस करेंगे. समय पर सोचे हुये कार्यों के बनने का योग है. मानसिक संतोष और यश में वृद्धि होगी.

तुला- मेहनत के बावजूद कारोबारी कार्यों में परेशानी हो सकती है. विशेष श्रम तथा प्रयास से कार्यों में सामान्य सफलता के योग हैं. प्रतिष्ठा बनी रहेगी. विवादों को टालें.

वृश्चिक- नए संपर्क आगे बढ़ने में मदद करेंगे. नवीन योजनाओं का शुभारंभ होगा. शीघ्रता में किये गये कार्यों में सावधानी रखें. नुकसान हो सकता है.

धनु- साझेदारी लाभदायी रहेगी. अचानक बड़ी सफलता से खुशी होगी. नौकरी संबंधी प्रयासों में सफलता मिलेगी. राजकीय सहयोग से रूके कार्य बनने का योग है.

मकर- अविवाहित वैवाहिक चर्चाओं में सफलता को लेकर उत्साही रहेगें. धार्मिक सत्संग से मानसिक प्रसन्नता होगी. प्रवास का योग है. निजी पुरूषार्थ बना रहेगा.

कुम्भ- पारिवारिक और निजी संबंधों में मधुरता बढ़ेगी. समाज में मान सम्मान और बर्चस्व बढ़ेगा. शारीरिक शिथिलता दूर होगी. जीवनसाथी का अच्छा सहयोग रहेगा.

मीन- लोग आपसे प्रभावित होगें. बाहर जाने का कार्यक्रम बनेगा. व्यवसायिक कामकाज की अधिकता रहेगी. मनोरंजन के साधनों में वृद्धि होगी.

उदयकालीन ग्रह चाल

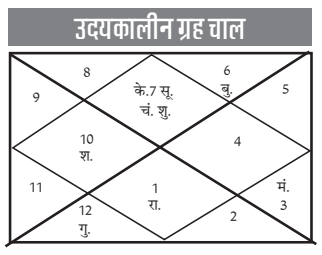

पंचांग

रा.मि. 16 संवत् 2082 श्रावण शुक्ल त्रयोदशी गुरूवासरे दिन 1/28, पूर्वाषाढ़ नक्षत्रे दिन 2/14, विष्कुम्भ योगे दिन 7/44, तैतिल करणे सू.उ. 5/28 सू.अ. 6/32, चन्द्रचार धनु रात 8/27 से मकर, शु.रा. 9,11,12,3,5,7 अ.रा. 10,1,2,4,6,8 शुभांक- 2,4,8.

व्यापार भविष्य

श्रावण शुक्ल त्रयोदशी को पूर्वाषाढ़ नक्षत्र के प्रभाव से रूई, कपास, सूत, वस्त्र, सन, मैथी, तांबा के भाव में समानता रहेगी.मोट, मसूर, बाजरा, मक्का, गुड़, मूंगफली, तेल, घी में तेजी का रूख रहेगा, अन्य वस्तुओं में पहली बनी लाईन समानता की रहेगी. भाग्यांक 2563 है.

SUDOKU 7118

5	9			3			8	7
8	7		1		5			
		2			9			4
	6				2		3	5
3	8		4	1	7		2	9
2	4		6				1	
7			3			8		
			5		8		7	3
9	3			2			6	1

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7117

7	4	8	3	9	2	1	5	6
2	6	9	5	7	1	8	4	3
3	1	5	4	8	6	7	2	9
5	7	4	8	6	9	3	1	2
8	9	1	2	3	4	6	7	5
6	3	2	1	5	7	4	9	8
4	8	7	6	2	5	9	3	1
9	2	6	7	1	3	5	8	4
1	5	3	9	4	8	2	6	7